अधखाया फल

आनंद हर्षुल

अधखाया फल

आनंद हर्षुल

छोटी बहन सीमा को

कि जिसके मन में हम लोगों के लिए

एक कोना अब भी बचा हुआ है-बीते दिनों का।

और चार्वी, उंर्वी, अनु, अवनी, सौरिश, पलाश, प्रणय जैसे नन्हों

को कि उनके मन के सभी कोने बचे रहें हमेशा- एक-दूसरे के लिए।

अनुक्रम

यह दुर्गन्ध जो है	4
कैमरे की आँख	18
उस स्त्री का पति	26
अधखाया फल	40
सवारी गाड़ी के दृश्य	70
दुपहर का बग़ीचा	91

यह दुर्गन्ध जो है

उस कमरे से, अभी-अभी खखारने की तेज आवाज और उसके कुछ क्षण बाद-थोड़ी धीमी थूकने की, और फिर कराहने की आवाज बाहर आई है। वह कमरा घर से छिटका हुआ है- अलग-थलग। इस तरह कि घर के पीछे आँगन है और आँगन के दाहिनी ओर संडास है और बाईं ओर वह कमरा है। कमरे और संडास के बीच मुनगे का पेड़ है- पुराना। मुनगे का पेड़, घर को देखता खड़ा है- कमरे और संडास के साथ, जैसे अगल-बगल दो बच्चों को लेकर, एक आदमी खड़ा हो-घर के भीतर घुसने के इन्तजार में और घर के भीतर घुसना मना हो। मुनगा फूलता है तो बच्चो के सिर पर, मुनगे के सफेद फूल खिलते हैं-इतने अधिक सफेद फूल कि संडास और उस कमरे की खपरैली-छत, सफेद होते-होते बचती है। और जब सफेद फूल, सूखने लगते हैं तो खपरैल पर पीले धब्बे उगते हैं-नए गिरे सफेद फूलों पर। पीले फूल धीरे-धीरे काले होते हैं और सफेद और पीले फूलों के नीचे पड़े-पड़े नष्ट हो जाते हैं, पर उनका नष्ट होना पीले और सफेद फूलों के नीचे दबा रहता है- दिखता नहीं है।

खखारने और थूकने और कराहने की जो आवाजें, अभी-अभी बाहर आई हैं-वे रामशरण जी की आवाजें हैं, जो उस कमरे से आँगन को फलाँगते यहाँ, घर तक आ रही हैं-बार-बार और थोड़ी-थोड़ी देर में। आँगन को ध्यान से देखो-उस पर रामशरण जी की आवाजों के घिसटने के निशान है। घर, अगर आँगन की ओर खुलनेवाला दरवाजा बन्द कर दे और बन्द कर दे यह अकेली खिड़की, जिससे बाहर जाए बिना आँगन दिखता है तो भी घर के भीतर घुसने के लिए, रामशरण जी की आवाजें-सरंध्र ढूँढ़ ही लेती हैं। वे भीतर घुसती हैं और घुसते ही पूरे घर में तेजी से फैलती हैं-एक कमरे से दूसरे कमरे तक। घर की हर वस्तु को उनकी बीमार आवाजें छूती हैं। रामशरण जी के बेटे को लगता है कि ठीक उसकी बगल में, उसके पिता खखारकर थूक रहे हैं.... कराह रहे हैं.... बेटा दिन में कई बार चौंकता है कि थूक उसके ऊपर गिरा, कि कराह गिरी.... किसी चीज को छुआ तो लगता है कि पिता की बीमार आवाज को छू रहा हो। रामशरण जी की बहू घर में रबड़ की चप्पल पहनकर घूमती है कि पैर, ससुर की कफभरी थूक से लिथड़ न जाए-लिथड़ न जाए ससुर की कराहों से...बहू, दिन में कई बार अपने पैरों को धोती है। कितना भी बचो-ससुर के थूक के छींटे तो पैरों पर पड़ ही जाते हैं...

इस कमरे से- इस घर के बीच की दूरी, बड़ा-सा आँगन है, फिर भी बेटे और बहू दोनों को लगता है कि घर की हर वस्तु, हर दीवार, हर छत और सारा फर्श-रामशरण जी की बीमार आवाजों में डूबा हुआ है। सिर्फ आवाजें होतीं तो भी ठीक थीं-आवाजों की दुर्गन्ध भी है। और यह दुर्गन्ध घर के हर कोने में बैठी हुई है। बिना कोनों का कोई घर नहीं होता है। पहली बार बेटे और बहू ने ठीक-ठाक जाना है कि एक घर में, छत से लेकर फर्श तक कितने कोने होते हैं।

इस कमरे से, रामशरण जी को बाहर का बहुत ज्यादा दिखता नहीं है। सिर्फ सीधे पड़े रहना है, पास, अपनी ताकत पर करवट भी नहीं है तो सीध में जितना दिखे, उतना दिखता है। सिर हिला लेते हैं तो थोड़ा-बहुत आजू-बाजू-दीवारों का दिखना है। और बिलकुल आखिर तक सिर को दाएं या बाएँ मोड़ लेते हैं तो पलँग से दूर, दीवार से जुड़े फर्श को भी वे देख लेते हैं।

इस कमरे की छोटी-सी खिड़की-जिसमें लोहे की तीन मोटी छड़ें लगी हैं, उनके देखने की सीध में है। खिड़की से मुनगे का तना दिखता है-साँवला-सा मटमैला। इस दिखने में लोहे की तीन छड़ें घुली रहती हैं-अपने ठंडे लोहेपन के साथ। मुनगे की पत्तियाँ नहीं दिखती हैं। पत्तियों की सरसराहट भी नहीं दिखती है। (मुनगे के पेड़ में, पीपल के पेड़ की तरह, सरसराहट होती भी नहीं है।) मुनगे की पत्तियाँ हिलती हैं तो झरते फूलों में बोलती हैं और रामशरण जी मुनगे की चुप सरसराहट को सुनते रहते हैं। वे पत्तियों और फूलनों का झरना सुनते हैं कि जैसे अपनी देह के झरते जाने को भूलने की कोशिश कर रहे हों। कमरे के अलावा, बाहर का दिखना और बाहर का भीतर होना, इतना कम है कि दिन का समय इतना लम्बा होता है कि पार करो और करते रहो और पार नहीं होता है। नींद में गिरो तो समय नींद में गिरकर ही खत्म होता है। रामशरण जी दिन में भी कई बार नींद में गिरते हैं-कभी दवा तो कभी देह उन्हें नींद में गिराती है। नींद में गिरे रामशरण जी-सबसे अच्छे समय में गिरे हुए होते हैं।

रामशरण जी की उम्र, इस बरस की सर्दियों में उनहत्तर की हो जाएगी। अभी लेटे हैं तो उनके कद का अन्दाज नहीं लग रहा है। कमर से लटकी कैथेडर की थैली-और पलँग के नीचे पड़े बेडपान के कारण स्थिति दयनीय लग रही है, पर अगर वे अभी उठकर खड़े हो जाएँ तो छह फीट तीन इंच का अपना पुराना और ऊँचा कद

बनाए रखेंगे। उनका कद, उनके और आसपास के मोहल्ले में किसी के पास नहीं है! बिस्तर पर गिरने से पहले तक उनकी कमर झुकी नहीं थी। बुढ़ापे में कमर ही कद को खाती है पर उनके कद को बीमारी खा रही है। चेहरा धँसा हुआ है-हफ्तों की सफेद दाढ़ी के नीचे, वह धीरे-धीरे और कम होता जा रहा है। चादर के नीचे चड्डी और बंडी पहनी उनकी देह में, पीठ और कमर-बिस्तर के घावों की पीड़ा से भरी हुई हैं और देह भी इतनी कम हो चुकी है कि किसी दिन गायब हो जाए तो आश्चर्य न हो। सबसे बेचैन उनकी आँखें हैं कि बहुत देखना चाहती हैं, और देखने को बहुत कम है। पड़े-पड़े रामशरण जी यह अन्दाज नहीं लगा सकते हैं कि उनके छह फीट तीन इंच कद को उनकी बीमारी खा रही है और वे अपना कद बहुत तेजी से खोते जा रहे हैं-महीने में एक इंच तो किसी-किसी माह डेढ़-दो इंच भी।

रामशरण जी मुनगे के तने से दूर देखते हैं तो तने के पीछे छिपा-छिपा-सा संडास का दरवाजा दिखता है। वे बहू-बेटे को संडास आते-जाते देखते हैं। ठीक-ठीक नहीं देख पाते तो सुनते हैं। सुनते इसलिए कि संडास के दरवाजे का टीन इतनी जोर से बोलता है कि पूरा आसपास सुनता है और चौंकता नहीं है कि सुनते-सुनते आदी हो गया है। रामशरण जी चौंकते हैं। पहले नहीं चौंकते थे, जब से इस कमरे में हैं तो संडास का दरवाजा ही दिखता है तो उसकी आवाज भी दिखती है तो चौंकते हैं। (बेटे के समय में, घर धीरे-धीरे बदलता गया है, पर संडास और उसका दरवाजा पुराना ही है। बेटे ने घर वहाँ-वहाँ बदला है, जहाँ-जहाँ वह लोगों के दिखने में आता है। संडास लोगों के दिखने में नहीं है। यह कमरा भी जिसमें वे पड़े हैं-लोगों के दिखने में नहीं है।)

इस कमरे से रामशरण जी को घर नहीं दिखता है-जो अब ठीक-ठीक बेटे-बहू का है और ठीक-ठीक उनका नहीं है। इस कमरे का दरवाजा, उनके पैरों की ओर है, दरवाजा इधर लौट आता उनके सिर की ओर तो घर दिखता जरूर। रामशरण जी महीनों पहले देखे घर को अपने मन में देखते हैं कि कैसे पुरानी चीजें वहाँ से हटती गई थीं और नई चीजें उनकी जगहों पर बैठती गई थीं। घर इस तरह सजा कि दीवारों और छतों में नया प्लास्टर और प्लास्टिक पेंट हुआ। फर्श का काला और सस्ता पत्थर-संगमरमर के पत्थर में बदल गया। सबकुछ बेटे ने किया तो पिता को अच्छा लगा। घर को आगे बढ़ाता लायक पुत्र। पुत्र की योग्यता पर आश्चर्य भी था कि उसकी नौकरी के भीतर कौन-सा जादू है जो रामशरण जी की नौकरी के भीतर सेवानिवृत्ति तक नहीं रहा है। उनके पास